CSM8MSX

संकलित परीक्षा - II (2016-17)

हिन्दी 'अ'

कक्षा -X

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 90**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के **चार खंड** हैं - **क, ख, ग** और **घ।**

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड-क (अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

(1x5=5)

जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सन्तुलित आहार की ज़रूरत है, उसी तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी पुस्तकें अनिवार्य हैं। अच्छी पुस्तकें वे हैं ; जो मानसिक पोषण दे सकें, बच्चों को सहजभाव से संस्कारवान् बना सकें। ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिए कुछ नहीं लिखा जा रहा है। लेकिन बाल - लेखन में ऐसा ढेर सारा लेखन है जो या तो बच्चे को कोरी स्लेट मानकर लिखा जा रहा है या यह सोचकर कि यह बच्चे को जानना ही चाहिए। भले ही उस लेखन का बच्चे के व्यावहारिक जीवन से कोई लेना-देना न हो। बच्चों के लिए जो लिखा जाए , यह विचार भी किया जाना चाहिए कि उसका प्रभाव क्या होगा? इस समय इलेक्ट्रानिक मीडिया की धूम है। इसका त्वरित प्रभाव भी नज़र आ रहा है। बहुत सारी चिन्ताजनक विकृतियों का जन्म हो रहा है । बच्चों की सहजता तिरोहित होती जा रही है । ऐसे कितने अभिभावक या रिश्तेदार हैं जो जन्म दिन के अवसर पर बच्चों को उपहार में पुस्तकें देते हैं? मैं समझता हूँ, न के बराबर। खिलौनों में अगर पिस्तौल दी जाएगी तो वह उसके कोमल मन को एक दिन गलत दिशा में ले जाएगी। बच्चों को उनकी रुचि के अनुकूल अगर किताबें मिलेंगी तो वे ज़रूर पढ़ेंगे।

1. जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सन्तुलित आहार की ज़रूरत है , उसी तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं -
   (i) अच्छी आवोहवा (ii) अच्छा स्वास्थ्य
   (iii) अच्छी पुस्तकें (iv) अच्छा व्यवहार
2. इलेक्ट्रोनिक मीडिया का बच्चों पर त्वरित प्रभाव नजर आ रहा है -
   (i) उनमें चिन्ताजनक विकृतियों का जन्म हो रहा है।
   (ii) वे पढ़ने में रुचि लेते हैं।
   (iii) उनका सामान्य ज्ञान बढ़ रहा है।
   (iv) वे लापरवाह हो रहे हैं।
3. अच्छी पुस्तकें वे होती हैं जो बच्चों को बना सकें -
   (i) सहज रूप से संस्कारवान।
   (ii) अनुभवों के अनुकूल।

(iii) रुचि के अनुकूल।

(iv) स्वस्थ और प्रसन्न।

4. बच्चे को 'कोरी स्लेट' क्यों कहा गया है?

(i) बच्चे नादान होते हैं (ii) बच्चे चंचल होते हैं

(iii) बच्चे अस्थिर होते हैं (iv) बच्चों का मन साफ होता है

5. 'तिरोहित' शब्द का अर्थ है–

(i) छिन जाना (ii) समाप्त हो जाना

(iii) प्राप्त कर लेना (iv) भूल जाना।

2 **गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए : (1x5=5)** 5

हम शरीर में अपनी स्थिति मान लेते हैं, अपने को शरीर मान लेते हैं तो यह हमारी गलती है। गलत बात का आदर करना और सही बात का निरादर करना ही मुक्ति में खास बाधा है। अपने को शरीर मानकर ही हम कहते हैं कि मै बालक हूँ, मैं जवान हूँ, मैं बूढ़ा हूँ। वास्तव में हम न बालक हुए न हम जवान हुए, न हम बूढ़े हुए, प्रत्युत शरीर ही बालक हुआ, शरीर ही बूढ़ा हुआ। शरीर बीमार हो गया तो मैं बीमार हो गया, शरीर कमजोर हो गया तो मैं कमजोर हो गया, धन पास में आ गया तो मैं धनी हो गया, धन चला गया तो मैं निर्धन हो गया– यह शरीर और धन के साथ एकता मानने से ही होता है। जब क्रोध आता है, तब हम कहते हैं कि मैं क्रोधी हूँ! विचार करें, क्या क्रोध सब समय रहता है? क्या सबके लिये होता है? वस्तुत: जो हरदम नहीं रहता और जो सब के लिये नहीं होता, वह मेरे में कैसे हुआ?

(i) हमारी गलती क्या है?

(क) स्वयं को शरीर मानना। (ख) स्वयं की स्थिति मानना।

(ग) गलत बात पर आदर करना। (घ) मुक्ति में बाधा पहुँचाना।

(ii) कौन सा कथन सत्य है?

(क) मैं जवान हूँ। (ख) शरीर जवान है।

(ग) आत्मा जवान है। (घ) मन जवान है।

(iii) कोई व्यक्ति धनी निर्धन तब होता है, जब :

(क) धन नही रहता।

(ख) धन आता है।

(ग) धन आता जाता रहता है।

(घ) शरीर और धन के साथ एकता स्वीकार करता है।

(iv) व्यक्ति कब कहता है कि मैं जवान हूँ?

(क) जब जवान होता है।

(ख) जब उसे जवानी का अनुभव होता है।

(ग) जब अपने को शरीर मान लेता है।

(घ) जब नशें में होता है।

(v) व्यक्ति क्रोधी होता है?

(क) जब क्रोध आता है। (ख) जन्मजात ही।

(ग) जिसे क्रोध आता है। (घ) जो शांत नहीं रहता।

3 **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँट कर** 5

लिखिए। **(5x1=5)**

ऐसे सच्चे वीर बनो तुम भारत माँ के लाल
जिनके कारण हुआ देश का जग में ऊँचा भाल
आजादी अधिकार तुम्हारा
यही एक था जिसका नारा
भारत के जन – जन का प्यारा
फँसा सका था जिसे न बिल्कुल
धन पद का जंजाल
लोकमान्य से बनो वीर तुम
भारत माँ के लाल
डगर सत्य की दिखा गया जो
गीत प्रीत का सिखा गया जो
दीप मुक्ति का जला गया जो
जिसने सेवा के सुमनों से
गूँथी थी जयमाल
बनो सत्यमय बापू जैसे
भारत माँ के लाल।
मोती के नयनों का तारा
जनता के प्राणों का प्यारा
भारत माँ का राज दुलारा
राह दिखाई जिसने हमको
लेकर ज्ञान मशाल
तुम भी बनो कर्मरत जैसे
वीर जवाहरलाल

(क) कविता में संबोधित किया गया है–

(i) महात्मा गांधी को। (ii) लोकमान्य तिलक को।
(iii) भारत के नवयुवकों को। (iv) जवाहरलाल नेहरू को।

(ख) निम्नंकित में से कविता में उल्लेखित महापुरुष नहीं है–

(i) सरदार भगतसिंह। (ii) जवाहरलाल नेहरू
(iii) लोक मान्यतिलक (iv) महात्मा गांधी

(ग) ''आज़ादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'' का नारा देने वाले महापुरुष थे–

(i) प. नेहरू (ii) गांधी जी
(iii) बाल गंगाधर तिलक (iv) सरदार भगतसिंह

(घ) निम्नांकित में गाँधी जी के बारे में सत्य कथन है –

(i) ज्ञान की मशाल जलाने वाले।
(ii) सेवा का महत्व बताने वाले।

(iii) सत्य और प्रेम का मार्ग दिखाने वाले।

(iv) प्रेम का पाठ पढ़ाने वाले।

(ङ) किसके कारण देश का मस्तक ऊँचा हुआ?

(i) जवाहर लाल के कारण (ii) किसानों के कारण

(iii) मजदूरों के कारण (iv) सच्चे वीरों के कारण

4 **निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर सही उत्तर दीजिए-** **(5x1=5)** 5

चल पड़े पैर जिस ओर पथिक, उस पथ से फिर डरना कैसा?
यह रुक-रुक कर बढ़ना कैसा?
होकर चलने को उद्यत तुम ना तोड़ सके बंधन घर के
सपने सुख वैभव के राही ना छोड़ सके अपन उर के।
जब शोलों पर ही चलना है पग फूँक -फूँक रखना कैसा।।
पहले ही तुम पहचान चुके यह पथ तो काँटों वाला है।
पग - पग पर पड़ी शिलाएँ हैं कंकड़ मय काँटों वाला है।
दुर्गम पथ अँधियारा छाया फिर मखमल का सपना कैसा।
होता है प्रेम फकीरी से इस पथ पर चलने वालों को
पथ पर बिछ जाना पड़ता है इस पथ पर बढ़ने वालों को
अपने सुख को खोने आकर यह सुख - दुख का रोना कैसा?।।

(1) कविता में ऐसे पथ पर बढ़ने की कामना की गई है, जो -

(क) सुविधा का है। (ख) आनंद का है।

(ग) साधना का है। (घ) पक्का राजमार्ग है।

(2) मार्ग के संकटों का प्रतीक नहीं है-

(क) शोला। (ख) मखमल।

(ग) काँटा। (घ) कंकड़ पत्थर।

(3) फकीरी से प्रेम का आशय है -

(क) भिक्षुक बनना। (ख) गरीब रहना।

(ग) फटेहाल रहना। (घ) अभावों में भी मस्त रहना।

(4) 'घर के बंधन' का अर्थ है -

(क) शादी। (ख) माता - पिता।

(ग) संसार का मोह। (घ) घर के दायित्व।

(5) 'पग-पग' में अलंकार है-

(क) उपमा (ख) पुनरुक्ति प्रकाश

(ग) रुपक (घ) श्लेष

खण्ड-ख (व्यावहारिक व्याकरण)

5 निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए- 3

(i) डॉक्टर के कहे अनुसार मैं परहेज कर रही हूँ। (मिश्र वाक्य)

	(ii) लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे। (संयुक्त वाक्य) (iii) देश की रक्षा करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। (मिश्र वाक्य)	
6	निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए– (i) लड़कियाँ पुस्तकें पर लिख रही हैं। (कर्मवाच्य) (ii) हम हँसते हैं। (भाववाच्य) (iii) मेरे द्वारा व्यायाम किया जाता है। (कर्तृवाच्य) (iv) गाँधीजी ने उपदेश दिया। (कर्मवाच्य)	4
7	निम्नांकित वाक्यों के रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए– (i) मैं स्वयं पत्र लिखूँगा। (ii) उसकी पुस्तक बैग में है। (iii) आकाश में रंग बिरंगी पतंगे उड़ रही है। (iv) हवा चलती है।	4
8	(क) 'करुण रस' का स्थायी भाव लिखिए। (ख) 'वीर रस' का विभाव लिखिए। (ग) 'वैराग्य' किस रस का स्थायी भाव है? (घ) ''सो विलगाइ विहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।'' में कौन–सा रस है?	4
	खण्ड–ग (पाठ्य–पुस्तक)	
9	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए– (2+2+1)** शाहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सज़दे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज़ के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाते हैं – 'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे । सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ । उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा, फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी। (1) बिस्मिल्ला खाँ अल्ला से अस्सी वर्षों से क्या प्रार्थना कर रहे थे? (2) बिस्मिल्ला खाँ को किस बात पर पूर्ण विश्वास था? (3) बिस्मिल्ला खाँ सुर में कैसी विशेषता चाहते थे?	5
	निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–	
10a	शिक्षिका शीला अग्रवाल के व्यक्तित्व की कैसी छाप लेखिका मन्नू भंडारी में दिखलाई दी ?	2
10b	स्त्री शिक्षा के विरोधी लोग, प्रायः कैसी दलीलें और उदाहरण उस युग में स्त्रीशिक्षा के विरोध में दे रहे थे ?	2
10c	संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है और इसका दुष्परिणाम क्या होता है?	2
10d	'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर लिखिए कि उस समय में लड़कियों की स्थिति कैसी थी क्या वे पूर्णतः स्वतंत्र थीं?	2
10e	क्या संस्कृत नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत भाषा में वार्तालाप करना उनके अपढ़ होने का प्रमाण है? महावीर प्रसाद	2

		द्विवेदी का मत स्पष्ट कीजिए।	
	11	सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।। सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।। सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।। बहु धनुही तोरी लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई।। येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।। (1) काव्यांश में सहस्त्रबाहु के समान परशुराम का शत्रु कौन है? परशुराम ने उसे क्या निर्देश दिया? (2) परशुराम की बात पर मुस्कराते हुए लक्ष्मण ने क्या कहा? (3) सेवक की पहिचान क्या होती है?	5
		निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-	
	12a	कवि ने उत्साह और आशा का संदेश किन शब्दों में दिया है? 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर बताइए।	2
	12b	'कन्यादान' कविता में वस्त्र आभूषणों को शाब्दिक भ्रम किसलिए कहा गया है?	2
	12c	गाए जा चुके राग को फिर से गाने की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार होती है? 'संगतकार' के आधार पर लिखिए।	2
	12d	प्रत्येक सुख के साथ दुख का आगमन अवश्यभावी है। इस तथ्य को कवि ने किस प्रकार स्पष्ट किया है? 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर लिखिए।	2
	12e	सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं? 'संगतकार' के आधार पर लिखिए।	2
	13	' मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आलोक में बताइए कि आज विज्ञान ने हमारा जीवन सुविधाजनक तो अवश्य बना दिया है लेकिन उसके दुरुपयोगों को भी हम नकार नहीं सकते। विज्ञान का दुरुपयोग आज कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है ? इसे रोकने के कुछ उपाय सुझाते हुए उत्तर दीजिए।	5
		खण्ड-घ (लेखन)	
		दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।	
	14	**प्रदूषण की समस्या :** ● पर्यावरण और हम ● प्रदूषण के कारण ● प्रदूषण के प्रकार	10
		अथवा	
		बसंत : ऋतु ● बसंत की शोभा ● प्रकृति में परिवर्तन ● जन-जीवन पर प्रभाव	10
		अथवा	
		आज की नारी अबला नहीं :	10

		• वर्तमान समाज में नारी का स्थान • नारी की आत्मनिर्भरता • सभी क्षेत्रों में सहभागिता	
	15	अपने नगर के थानाध्यक्ष को एक पत्र लिखकर मोहल्ले में चल रही जुआखोरी की जानकारी दीजिए और उपयुक्त कदम उठाने का अनुरोध कीजिए।	5
	16	**निम्नलिखित गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।** भारत में अनेक विदेशी संस्कृतियों ने पैर पसारने का प्रयास किया किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी सुरक्षित तथा विकासशील है। इसका प्रमुख कारण भी यही है कि भारतवासियों को मानवोचित कर्त्तव्यों का ज्ञान है तथा वे प्राण देकर भी मानव-धर्मों का पालन करते हैं। डॉ. इकबाल ने लिखा है - कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी . .... भारतीय संस्कृति सदा भौतिकता के स्थान पर आध्यात्मिक जीवन के विकास पर बल देती रही है। भारतीय मानते हैं कि भौतिक शरीर क्षणभंगुर तथा आत्मा नित्य होती है। अत: व आत्म-विकास तथा आत्म-ज्ञान को अधिक महत्त्व देते हैं। आत्म-विकास के लिए जीवन में नैतिकता को अपनाना अनिवार्य है। जब मनुष्य नैतिक आत्म-विचारों को अपना लेता है तो उसका शरीर, बुद्धि और मन भी सन्तुलित हो जाता है। यह सन्तुलन उसे नीतिपूर्वक जीवन-यापन करने में सहायता देता है। मनुष्य में नैतिकता का बीजांकुरण बाल्यावस्था में ही हो जाना चाहिए क्योंकि बालक गीली मिट्टी के समान होता है। अत: उसे जैसा चाहें ढाला जा सकता है। बाल्यावस्था में जो प्रवृत्ति बन जाती है, आजीवन वही संस्कार बने रहते ह।	5
		-o0o0o0o-	